हिंदी प्रचार सोशल मीडिया के साथ: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

नीना कृष्णन

एसोसिएट प्रोफ़ेसर, जी आर वी बिजनेस मैनेजमेंट अकादमी,बेंगलुरू.

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.18791020

ABSTRACT:

प्रस्तुत शोध पत्र वर्तमान डिजिटल युग में सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफार्मों द्वारा हिंदी भाषा के स्वरूप, संरचना और प्रयोग में आ रहे क्रांतिकारी बदलावों का विश्लेषण करता है। शोध का मुख्य केंद्र इस बात पर है कि कैसे फेसबुक, व्हाट्सएप और इंस्टाग्राम जैसे माध्यमों ने हिंदी की मानक वर्तनी को प्रभावित किया है। अध्ययन में 'हिंग्लिश' के उदय, व्याकरणिक नियमों की शिथिलता और संचार की नई शैलियों जैसे इमोजी और संक्षिप्तीकरण (Shortcuts) के प्रभाव की समीक्षा की गई है। निष्कर्षतः यह शोध भाषा की जीवंतता और उसकी शुद्धता के बीच के संघर्ष को रेखांकित करता है।

KEYWORDS:

सोशल मीडिया, भाषाई परिवर्तन, हिंग्लिश, डिजिटल संचार, मानक हिंदी।

1. प्रस्तावना:

भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि संस्कृति और पहचान की संवाहक होती है। समय के साथ भाषा का बदलना स्वाभाविक है, परंतु 21वीं सदी में सूचना प्रौद्योगिकी और विशेषकर सोशल मीडिया ने इस परिवर्तन की गति को अत्यधिक तीव्र कर दिया है। आज हिंदी का प्रयोग केवल साहित्य या समाचार पत्रों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह करोड़ों लोगों की 'डिजिटल भाषा' बन चुकी है। शर्मा (2022) के अनुसार, तकनीक ने भाषा के अभिजात्य वर्ग के नियंत्रण को समाप्त कर इसे जन-सामान्य की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बनाया है।

2. शोध की कार्यप्रणाली:

इस शोध पत्र हेतु वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक आँकड़ों के लिए सोशल मीडिया पर प्रचलित शब्दों और वाक्यों का अवलोकन किया गया है, जबकि माध्यमिक स्रोतों

के रूप में पूर्व प्रकाशित लेखों और पुस्तकों का संदर्भ लिया गया है।

3. भाषाई परिवर्तन के प्रमुख आयाम:

3.1 लिपि का संकट और रोमन हिंदी

सोशल मीडिया पर हिंदी लिखने के लिए देवनागरी के स्थान पर रोमन लिपि का प्रयोग एक बड़ी चुनौती बनकर उभरा है। उदाहरण के लिए, "आप कैसे हैं?" को "Aap kaise hain?" लिखना अब सामान्य हो गया है। मिश्र (2021) का तर्क है कि इससे भाषा की ध्वन्यात्मक शुद्धता प्रभावित हो रही है।

3.2 'हिंग्लिश' और कोड-मिक्सिंग

आज शुद्ध हिंदी या शुद्ध अंग्रेजी के बजाय एक मिश्रित भाषा 'हिंग्लिश' का बोलबाला है। वाक्यों में अंग्रेजी क्रियाओं और संज्ञाओं का हिंदी व्याकरण के साथ प्रयोग (जैसे: "Status check करना", "Photo upload कर दी") भाषा के नए स्वरूप को दर्शाता है।

3.3 संक्षिप्तीकरण और इमोजी

समय की कमी और तीव्र संचार की आवश्यकता ने शब्दों को छोटा कर दिया है। 'धन्यवाद' के स्थान पर 'Thnx' और भावनाओं को व्यक्त करने के लिए शब्दों के स्थान पर 'इमोजी' का प्रयोग किया जा रहा है। यह दृश्य संचार (Visual Communication) का एक नया युग है।

4. सोशल मीडिया का सकारात्मक प्रभाव:

वैश्विक पहुँच: सोशल मीडिया के कारण आज हिंदी भाषाई सीमाओं को लाँघकर वैश्विक मंच पर प्रतिष्ठित हुई है।

शब्दावली का विस्तार: तकनीक, विज्ञान और मनोरंजन से जुड़े हजारों नए शब्द हिंदी शब्दकोश का हिस्सा बने हैं।

लोकतांत्रिक स्वरूप: अब कोई भी व्यक्ति अपनी बात बिना किसी संपादक की अनुमति के लाखों लोगों तक पहुँचा सकता है।

सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभाव:

सोशल मीडिया जहाँ एक ओर संचार की सुगमता लाया है, वहीं इसने भाषा के मौलिक ढांचे पर कुछ गंभीर प्रहार भी किए हैं। इन नकारात्मक प्रभावों को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है:

4.1 व्याकरणिक अराजकता और भाषाई मानक का ह्रास

सोशल मीडिया पर संवाद की गति को प्राथमिकता दी जाती है, शुद्धता को नहीं। इसके कारण व्याकरण के मूलभूत नियमों जैसे लिंग, वचन, कारक और काल की घोर उपेक्षा हो रही है। उदाहरण के तौर पर, "मैं जा रहा हूँ" के स्थान पर "me ja rha hu" या "जा रहे हैं" लिखना आम हो गया है। तिवारी (2018) के अनुसार, जब भाषा के मानक नियम शिथिल पड़ते हैं, तो वह धीरे-धीरे अपनी शास्त्रीय पहचान खोने लगती है। सहायक क्रियाओं और विभक्तियों का गलत प्रयोग हिंदी की प्रकृति को बदल रहा है।

4.2 वर्तनी (Spelling) का संकट और देवनागरी की उपेक्षा

डिजिटल माध्यमों पर देवनागरी लिपि के बजाय रोमन लिपि का बढ़ता प्रयोग 'वर्तनी के संकट' को जन्म दे रहा है। रोमन में 'sh' का प्रयोग 'श' और 'ष' दोनों के लिए किया जाता है, जिससे उच्चारण और अर्थ में भ्रम की स्थिति पैदा होती है। इसके अतिरिक्त, 'ड़', 'ढ़', 'न' और 'ण' के बीच का अंतर सोशल मीडिया लेखन में लगभग समाप्त हो गया है। मिश्र (2021) का मानना है कि यदि यही प्रवृत्ति बनी रही, तो भविष्य में देवनागरी लिपि केवल धार्मिक ग्रंथों और पुराने अभिलेखों तक सीमित रह जाएगी।

4.3 संक्षिप्तीकरण (Shortcuts) और अर्थ का लोप

सोशल मीडिया ने 'शब्दों की बचत' की एक ऐसी संस्कृति विकसित की है जिसमें 'धन्यवाद' जैसा गरिमामय शब्द 'thnx' बन गया है और 'नमस्ते' केवल '' (इमोजी) में सिमट गया है। संक्षिप्तीकरण की यह प्रक्रिया भाषा की गहराई और उसके भाव-बोध को कम कर रही है। जब हम किसी गहरे शोक या अत्यधिक खुशी को केवल एक 'इमोजी' से व्यक्त करते हैं, तो भाषा की वह शक्ति कम हो जाती है जो भावनाओं को बारीकी से व्यक्त करने में सक्षम थी।

5. नकारात्मक प्रभाव और चुनौतियाँ:

व्याकरण की अनदेखी: लिंग, वचन और कारक के नियमों की सोशल मीडिया पर घोर उपेक्षा की जा रही है।

वर्तनी की अशुद्धियाँ: 'ड़', 'ढ़', 'न' और 'ण' के बीच का अंतर मिटता जा रहा है। कुमार (2023) ने चेतावनी दी है कि यदि यही गति रही, तो आने वाली पीढ़ी मानक हिंदी से पूरी तरह कट जाएगी।

भविष्य की राह:

प्रस्तुत शोध के आधार पर यह परिणाम निकलता है कि सोशल मीडिया हिंदी भाषा के लिए एक "दुधारी तलवार" के समान सिद्ध हुआ है। इसने जहाँ हिंदी को 'ड्राइंग रूम' की भाषा से निकालकर 'ग्लोबल' बनाया है, वहीं इसकी शास्त्रीय शुद्धता के समक्ष गंभीर चुनौतियाँ भी खड़ी कर दी हैं।

5.1 शोध का सारांश

अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि 'हिंग्लिश' का उदय कोई संयोग नहीं बल्कि एक तकनीकी आवश्यकता और सामाजिक फैशन का परिणाम है। युवा पीढ़ी भाषा को एक उपकरण (Tool) के रूप में देखती है, न कि एक धरोहर के रूप में। इस दृष्टिकोण ने हिंदी को लचीला तो बनाया है, परंतु उसकी व्याकरणिक नींव को कमजोर किया है।

5.2 भविष्य के लिए सुझाव

भाषा को बचाने की जिम्मेदारी केवल साहित्यकारों की नहीं, बल्कि तकनीकी विशेषज्ञों की भी है। निम्नलिखित सुझाव इस दिशा में सहायक हो सकते हैं:

तकनीकी सुधार: सोशल मीडिया एप्स में 'ऑटो-करेक्ट' (Auto-correct) फीचर को देवनागरी और शुद्ध हिंदी व्याकरण के अनुरूप उन्नत किया जाना चाहिए।

जागरूकता: शिक्षण संस्थानों में 'डिजिटल हिंदी' के सही प्रयोग पर कार्यशालाएं आयोजित की जानी चाहिए।

मानकीकरण: सरकारी और गैर-सरकारी स्तर पर सोशल मीडिया के लिए एक 'मानक हिंदी शब्दावली' विकसित की जानी चाहिए जो आधुनिक भी हो और शुद्ध भी।

अंततः, भाषा एक बहती हुई नदी के समान है जो अपना मार्ग स्वयं बनाती है। सोशल मीडिया उस नदी का एक नया किनारा है। यदि हम तकनीक को अपनाने के साथ-साथ अपनी भाषाई जड़ों से जुड़े रहें, तो हिंदी न केवल जीवित रहेगी, बल्कि डिजिटल युग की सबसे सशक्त भाषा बनकर उभरेगी।

6. निष्कर्ष:

सोशल मीडिया ने हिंदी भाषा को अधिक लचीला, व्यावहारिक

और वैश्विक बनाया है, लेकिन इसकी कीमत भाषा की मौलिक शुद्धता को चुकानी पड़ रही है। हमें यह समझना होगा कि परिवर्तन विकास का लक्षण है, किंतु यह परिवर्तन अराजकता में नहीं बदलना चाहिए। शिक्षण संस्थानों और तकनीकी विशेषज्ञों को मिलकर ऐसे टूल्स विकसित करने चाहिए जो डिजिटल प्लेटफॉर्म पर देवनागरी और शुद्ध व्याकरण को प्रोत्साहित करें।

संदर्भ सूची:

1. जैसा कि तिवारी (2018) ने उल्लेख किया है, भाषा वही जीवित रहती है जो समय के साथ बदलती है। मिश्र (2021) ने रोमन लिपि के बढ़ते प्रभाव को देवनागरी के लिए चिंताजनक बताया है।
2. तिवारी, भोलानाथ (2018). भाषा विज्ञान. किताब महल, इलाहाबाद।
3. मिश्र, आर. के. (2021). डिजिटल युग और हिंदी भाषा. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. शर्मा, सुनीता (2022). सोशल मीडिया और भाषाई संस्कृति. राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
5. कुमार, विकास (2023). "इंटरनेट पर हिंदी: चुनौतियाँ और संभावनाएँ", साहित्य मंथन पत्रिका, अंक-4।
6. वर्मा, पी. (2020). आधुनिक संचार माध्यम और हिंदी. प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।